बरवाअड्डा बाजार

बिनोद बिहारी महतो (1923–1991)

सम्पादकः– पतित पावन महतो

बरवाअड्डा बानार

जी.टी. रोड का छोटा भाग धनबाद, गोबिन्दपुर, राजगंज, का संयोग स्थल है। 50 वर्ष अंतराल में अमुल परिवर्तन हुआ है। आयात/निर्यात का विभिन्न जनसमुदाय का आगमन विभिन्न संस्कार, संस्कृति का संगम स्थल बना है।

बहुत दिन से मन में एक आपार इच्छा थी बरवाअड्डा सम्बन्ध में आंकड़ा प्रकाश करना। यहाँ का प्रवासी मनुष्य का सहयोग प्राप्त हाने पर आगे चलकर "बरवाअड्डा बनार" एक साहित्य प्रत्रिका रूप में स्थान अधिकार कर सकता है।

पतित पावन महतो

सम्पादक

Printed By :

GIRIDHARI COMPUTER PRINT

Barajamua, Barwadda, Dhanbad (Jharkhand)

Mob : 8797786756, 8252871256

अनुकरणीय है स्वर्गीय विनोद बाबू की मार्ग दर्शक जीवन गाथा

मंगलवार 18 दिसंबर 2001
चमकता आईना

पी. पी. केसरियार
शिक्षक मन्दाकिनी उच्च, विद्यालय

बिनोद बिहारी महतो का जन्म बलियापुर प्रखण्ड के अन्तर्गत बड़ादहा गाँव 23 सितम्बर 1923 को हुआ था। पिता का नाम महेन्द्र एवं माता का नाम मन्दाकिनी था। प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के पश्चात् उन्होंने भिस्ती पाड़ा स्थित एच. इ. स्कूल से मैट्रिक परीक्षा, 1941 में पास की। जिलासमाहरणालय में कुछ दिन लिपिक पद पर नौकरी की । 1954 में वकालत पास करने के बाद धनबाद कोर्ट में वकालती शुरू की उसी समय से ही उनमें समाजिक एवं राजनैतिक चेतना का धीरे-धीरे विकास होने लगा और मन में कुछ कर दिखाने की ठान ली। अपने ही समाज में फेली सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए शिवाजी समाज नामक संस्था का गठन किया। समाज के दबे-कुचले लोग उनके साथ जुटने लगे। उसके बाद लोकप्रियता का दायरा बढ़ने पर बलियापुर प्रखण्ड के प्रमुख बने एवं धनबाद जिला परिषद के उपाध्यक्ष पद पर कई वर्षो तक आसीन रहे। 1980 में पहली बार टुण्डी विधानसभा सीट से विधायक चुने गए। सन् 1985 में अपने गृह क्षेत्र सिन्द्री विधान सभा से विधायक बने एवं पुन 1989 में टुण्डी से विधायक निर्वाचित हुए। 1991 में पहली बार गिरिडीह संसदीय क्षेत्र से सांसद चुने गए। 18 दिसम्बर को संसद भवन में ही दिल का दौरा पड़ा और राम मनोहर लोहिया अस्पताल में देहावसान हो गया।

कुड़मी समाज में फेली कुरीतियाँ बाल विवाह, छाड़-बाड़, देहजप्रथा आदि के खिलाफ बिनोद बिहारी महतो ने 18 अप्रैल 1969 को शिवाजी समाज का गठन किया। बहुत जल्दी ही बिहार-बंगाल उड़ीस में संगठन फैल गया। झारखण्ड में साजाजिक कार्यकत्ता के रूप में लोकप्रिय होने लगे। एक बार की घटना जिसमें मै सम्मिलित था, बंगाल में शिवाजी समाज की बैठक थी। संयोगवश बिनोद बाबू उपस्थित नहीं हो सके। उस समय शिवाजी समाज के मंत्री तोपचांची के टेकलाल महतो थे। विरोधी पक्ष ने प्रशासन की मद्द से बाहर सदस्यों, लक्ष्मीकांत मुतवार, वर्तमान झारखण्ड मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष अजीत महतो, अनिल महतो, जामिनी महतो, जगन्नाथ महतो आदि को पुलिस से गिरफ्तार करा दिया।

परीधीन भारत में उस समय अच्छे विद्यालय भी नहीं थे चूँकि बिनोद बिहारी महतो का जन्म किसान परिवार में हुआ था। और अपनी शिक्षा में जिस तरह की उन्हें कठिनाई

और मुश्किल हुई वह उनके मन में गड़ गई उसी के फलस्वरूप हुई वह आजाद भारत में आज बंगाल व झारखण्ड में करीब दो दर्जन से अधिक शिक्षालयों की स्थापना उन्होंने की। जिसमें महेन्द्र उच्च विद्यालय, बरवापूर्वा, पिता के नाम से एवं माता के नाम से मन्दाकिनी उच्च विद्यालय, बड़ा जमुआँ, बि.बि.एम.उच्च विद्यालय (कुरा) उल्लेखनीय हैं। बिनोद बिहारी महतो कॉलेज बलियापुर, राजगंज कॉलेज, राजगंज, धनबाद लॉ कॉलेज, चास महाविद्यालय उन्हीं की देन है।

बिनोद महतो समाज सुधारक, राजनीतिक नेता होने के साथ-साथ खेल प्रेमी भी थे। अक्सर देखा जाता था 8132 न. की जीप रेलवे मैदान में लगी रहती थी और अपने समर्थकों के साथ खेल का लुत्फ उठा रहे थें। बीच में चिनिया बादाम का ढेर लगा रहता था। कभी-कभी मुझे भी साथ रहने का सौभाग्य मिलता था जब मन्दाकिनी विद्यालय से मैं और हमारे प्रधानाध्यापक नन्दलाल महतो उनसे भेंट करने लिये जाया करते थे। खेल प्रतियोगिता आयोजन करने से वे बहुत खुश हुआ करते थे एवं आयोजक दलब को आर्थिक सहयोग भी करते थें।

शिवाजी समाज का वार्षिक अधिवेशन 20 अप्रैल 1970 को हुआ एवं सर्वसम्मति से स्वर्गीय बिनोद बिहारी महतो अध्यक्ष, एवं टेकलाल महतो, सचिव चुने गए। महाधिवेशन में धनबाद, हजारीबाग, पुरूलिया, गोड्डा, राजमहल, राँची, जमशेदपुर, पटना एवं उत्तर प्रदेश के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। 1971 में शिवाजी समाज के आलोक में सोनोत सान्थाल समाज का गठन कर उसका कार्यभार शिबू सोरेन कों दिया गया। शिवाजी समाज एवं सनत सउँताल समाज मिलकर 1973 में झारखंड आन्दोलन को नई दिशा देने के उद्देश्य से झारखण्ड मुक्ति मोर्चा का गठन बिनोद बिहारी महतो के निवास स्थान, 'चीरागोड़ा' में हुआ।

धनबाद गोल्फ ग्राउण्ड के खुले अधिवेशन में 4 फरवरी 1973 को स्वर्गीय बिनोद बिहारी महतो ने अपने अध्यक्षीय भाषण में शोषण, बिहीन झारखण्ड राज्य गठन के लिए क्रान्तिकारी आन्दोलन करने का फेसला किया गया। घोषणा के बाद झारखण्ड आन्दोल उग्र होनें लगा। बिनोद बिहारी महतो के आत्म विश्वास के साथ झारखण्ड अलग राज्य गठन के लिए सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक लड़ाई एक साथ चलने लगी। 'पढ़ो और लड़ो' के नारे के साथ उन्होंने जनता का आहान किया। झारखण्ड मुक्ति मोर्चा के द्वितीय अबिवेशन में स्थानीय विधायक ए. के. राय को न्योता दिया, जिससे झामुमो मासस मैत्री का सुत्रपात हुआ। आदिवासी एवं सनत साउँताल

समाज के बैनर तले सूदखोर, महाजन के खिलाफ जमीन वापसी आन्दोलन जोर पकड़ने लगा। आपात् काल के समय वे जेल भी गये और जेल से छुटने के बाद से ही बिनोद बिहारी महतो राजनैतिक जीवन में सिन्द्री विधायक से गिरिडीह सांसद तक का सफरनय किया और समाज में बाबू के नाम से भीष्म पितामह को स्थान प्राप्त कया।

नव वर्ष की आर्दिक शुभ कामनाएँ:-

कल्याणपुर बड़ा जमुआँ पेक्स लि०

(बैंकिंग यूनिट)

बरवाअड्डा, धनबाद

सुशील कुमार

मो0 : 9934519699

With Best Compliments From:-

KUSHWAHA MOBILE CENTRE & REPAIRING

DEALS IN ALL TYPES OF MOBILE HANDSET, RECHARGE COUPAN ETC.

TATA indicom | ex-cel | RELIANCE Mobile | Airtel | smart | LG | NOKIA | MOTOROLA

G.T. ROAD BARWADDA, DHANBAD (JHARKHAND)

Prop. *NIRANJAN KUMAR*

9693747051

बड़गाछ मुख्य कारक बना था बरवाअड्डा के नामकरण में

रविवार 18 जून 1998
चमकता आईना

पी. पी. केसरियार
शिक्षक मन्दाकिनी उच्च, विद्यालय

'डाक पुरूषेक देवल नाम बरेक अड्डा बरवाड्डा' व्यक्ति, वस्तु, समाज स्थान सभी का नामकरण किसी न किसी कारण वश होता है एवं स्थायी हो जाता है। बड़ाजमुआक नुनाराम महतो कहते है कि कहब बाबू! तखन ऐहे जी.टी. रोडेक धारी कन्ह नाई खलेक, सांझबेरा हेले कोई वाटेनिहि चले हेला, ऐहे जे पुराना मोड़ रहेलेक जहां गुप्ता बिल्डिंग बनलाहेक। इंठिन मस्त झोपड़ा बड़गाछ रहेलेक। चार धारे 2 (जड़) वाहराई रहलेक। निरन दिने पथित आर गरू-गाड़ीक अड्डा रहलेक, आर आईज बिजली आलअ रात दिन ऐके जेशन लागईक आर देशेक कोना-कोनाक गाड़ीक अड्डा। शेरशाह सूरीक बनावल ऐसे जी.टी. रोड़ 500 बछरेक आगुई बरवाड्डा आर आझुक बरवाड्डा आसमान-जमीनेक फरक। सन 1956 तक मानभूम के जभिन बांला का एक खंड बरवाअड्डा। मानभूम को बांटकर धनबाद जिला बनाया गया। कुछ अंश सिंहभूम जिला का बना, कुछ अंश पुरूलिया जिला बना। झारखंड का काला सोना का व्यापार क्षेत्र सारा हिन्दुस्तान का आयात-निर्यात का केन्द्र बन गया। ऐहे जी.टी. रोडेक दस धारे बड़ाजमुआ, बरवा, दामकड़ा शुड़ि, तेली, कुडमी, जलहा का प्रधान इलाका किन्तु आईज विभिन्न जातीक अड्डा बन गया है। यहां के मूलवासी आज सिमटकर रह गये हैं। आज 60 वर्ष का स्वाधीन भारत हुआ फिर भी समाज की व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गयी है। पुराना समाज का अगुंवा, एवं समाज सुधार आंदोलन, दहेज विरोधी यहां सांस्कृतिक चाहे शुड़ि, कुड़मी, तेली किसी भी जात का हो, केवल दिखावटी साबित बनकर रह गया है। मंदाकिनी उच्च विद्यालय का मैदान जों एक दिन फुटबॉल के लिए मशहूर था। फुटबॉल के बहुत से सितारे अपना भाग्य चमकाकर नौकरी प्राप्त किये। इसी मैदान में सतर दशक के प्रारंभ में राजनीतिक आखाड़ा का नींव डाला गया, आज कांग्रेस बीजेपी एमसीसी, जनता, झारखण्ड की अनेक हस्तियां नजर आने लगी। ऐसे भी कहा जाता है कि दिशम गुरू शिबू सोरेन का राजनैतिक हाथखड़ी बरवाड्डा में ही बिनोद बाबू की छत्रछाया में हुआ है। तथाकथित झारखंड कार्यालय आज नहीं है? फुटबॉल मैदान कहा है? सतर दशक में उभरकर आने वाल युवकों के बीच खेल के मैदान में एकता तो थी, किन्तु धीरे-धीरे अनेक दरार पड़ने लगी एवं वे विभिन्न घटकों में बंटने लगे। राजनैतिक अनेकता के कारण वहां का क्रमिक विकास नहीं हो पा रहा है

एक समय मोती मंडल का पकौड़ी दुकान था, आज अन्तर्जातीय व्यापार क्षेत्र बन गया है। किन्तु मामूली पोस्ट ऑफिस नहीं है? हिन्तुस्तान में आयात-निर्याद होने के कारण आर्थिक विकास तो हुआ है किन्तु यहां के मूल वासी को नहीं वे तो बेचारे, चौकिदार, पानी भरवा आज भी मजबूर है। आज बरवाबड्डा में सोनाक दामें माटी बेचा हईक। माटीक व्यापार आर्थिक प्रतियोगिता में खास अहमियत रखता है। विभिन्न प्रानतो से जनसमुदायों के आगमन के साथ-साथ यहाँ विभिन्न संस्कृति पनपी है। जहाँ तक सांवताल कुड़मी की संस्कृति परम्परा विलुप्त प्रायः लगती है, वहीं प्रांत का नया संस्कृति का बोलवाल अधिक दिखाई पड़ने लगा है। शिक्षा विभुख यह इलाका आज तक हाई स्कूल से वंचित रखा गया है। 1970 दशक में झारखंड केशरी बिनोद बिहारी महतो द्वारा उच्च्व विद्यालय की नींव रखा गयी, किन्तु राजनैतिक विषमता सरकारी उदासीनता के कारण सामूहिक जन-जागरण आज तक नहीं हुआ एवं वह मंजूरी से वंचित रह गया। साथ ही अंग्रेजी संस्कृति का बीज यहां पनपना शुरू ही नहीं हो गया है। उसके पौधें भी लहलहाने लगे हैं इस संस्कृति के लोग शिक्षा की अर्थ (धन) के साथ तुलना कर प्रतियोगिता खाड़ा कर दिये है। आज आवश्यकता इस बात की है कि अपने परिवार, गाँव मुहल्ले, अड़ोस-पड़ोस के लोगों में एकजुट होकर अपने समस्याओं से लड़ना तथा उसे दूर करना। लोगों में समन्वय की भावनाओं को जगाना। जब तक नई चेतना की जागृति नहीं होगी, इसलिए लोगों को सम्नवय का पाठ पड़ाकर ही जातीय झगड़ों, स्वार्थ लोलुपता आदि से समाज को बचाया जा सकता है। विशेष कर युवा वर्ग में अपने प्रति तथा राष्ट्र के प्रति उत्तरदायी होकर सेवा की भावना से हर काम को करना चाहिए।

With Best Compliments From:-

Mobile : 9431723863
9386293745

Remesh Pd. Mahato

JHARKHAND U.P LORRY BROKER

G.T. Road, Barwadda, Dhanbad, Jharkhand

खेलाई चंण्डी मेला, बड़ाजमुआँ

सोमवार 22 जनवरी 1996
धनबाद रश्मि

पी. पी. केसरियार
शिक्षक मन्दाकिनी उच्च, विद्यालय

संस्कृतिक वैचित्रपूर्ण विभित्रताओं में एकता का हमारा भारत देश अनमोल प्रतीक है। कृषि पर निर्मर इस देश का प्रत्येक त्योहार-मेला कृषि संबंधित होता है। आज का दिन देश विभिन्न प्रांत में विभिन्न रूप से मनाया जाता है किन्तु झारखण्ड में इसकी खास आदिम विशेषता देखा जाती है। आखान यात्रा, खेलाय चंडी आदि रूप में मनाने की परंपरा है। किसी चारी का गहराई से अध्ययन करने के लिए दो तरह से देखा जाना चाहिए (क) अंतर्मुखी (ख) वहिर्मुखी सर्वप्रथम अंर्तमुखी विचार किया जाए। आखान यात्रा का शाव्दिक अर्थ है अच्छा यात्रा का शुभ यात्रा, अव्यर्थ, सगुन। यहां के मूलवासी या आदिम जाति आज के दिन को सांसारिक जीवन यात्रा के हर पहलू की शुरूआत करते हैं। कृषि कार्य की शुरूआत आड़हाई पाक हल चलाकर किया जाता है। इसे अंतर्मुर्खान हरपुनहा के रूप में माना जाता है। इसकी विशेषता यह है कि कृषि परिवार का विशेष व्यक्ति स्नान करके गिले वस्त्र में ही अपना जभिते आड़हाई पाक हल कर्षन करता है। हल चलाना की विशेषता है पश्चिम से पूर्व मुख में चलाना पड़ता है। हलवाही गरू के इसी अवस्था में घर लाया जाता है और गृहवधू दरवाजा पर सूची वस्त्र में गरू का खुर पानी से धोती है तथा सिर पर तेल सिन्दुर लगाने के प्रणाम करती है। उसके वाद जो हाल पुनहा करता है। उसका पैर धोकर तेल लगा देती है। विशेषता आज का दिन वर्ष की शुरूआत माना जाता है। इसलिए कृषि कार्य का तथा परिवार का सांसारिक कार्य संबंधित सहातार्थ कामार, नापित, कुम्हार, भातुआ बारमसिया आदि कर्म सम्प्रदाय द्वारा लोक कथा वातरा (पाक युक्ति) किया जाता है। गृह निर्माण कार्य का गुड़ि काटना आज ही से किया जाता है। लड़का या लड़की की शिक्षा का शुरूआत आज से ही होती है। आज के दिन को सगुन मानकर लड़का-लड़की का वैवाहिक कार्य लेन-देन किया जाता है।

आखान यात्रा दिन को इस क्षेत्र में मेला के रूप में विभिन्न प्रकार के अनुष्ठानों में मनाया जाता है। जिसका नाम खेलाई चंडी है, किन्तु उनके प्रकार अलग अलग है जैसे-

भाव परब

इसकी विशेषता यह है कि लाया था पुजारी तंतु वस्त्र, परिधान करके गरम कड़ाई से पिठा पुआ छाकता है। वाजा-वाजना के साथ इसको देखने के लिए धूम पड़ जाता है।

परान खुड़ा

कुड़माली लघु कथा

पी. पी. केसरियार
शिक्षक मन्दाकिनी उच्च, विद्यालय

ढेइर आगुक कथा हेकेक मानभूमेक माड्डु मुलुके परान बुढ़ाक रहेतलेक। छअटअ बड़अ बहु, बेटी सोभेकर परान खुड़ा आर लोटा ओहेलेसन। छोवाक संगे छोवा, बुढ़ाक संगे बुड़ा, भेसुर बोआसिन एकेरकम गाल मारेइक, बांगाली करा ओकर काम। विहाने झुमोरके सुरे गान धोरिके गोरूपाल लोइके दिन सगरे टाँइड़ी रोहेतलेक। रोद वासात, मेघ झोड़ कोन्हो नई मानेक टाँइड़े ओकर जीवन। लेखा पोढ़ाक धाइर पासे निहि मेनेक सास्तर बुद्धि बेड़ी रोहलेक नित नौतन केहनी बुझल सिखोत कथाय छोवा-पुता गोबर खुढ़ाक जेनी के माताई राखोईतेलेक एक दिन जोतेक बागाल छोवाके गोरू गोढेक समय कोहलेक आवा तोहरा एकता नष्ठा जिनिस देखाअब सोभेअ जड़अ हेला। आज कोढ़चलैय एकता लाहा भाँगा आर बाँसेक ढुली लाल सुता गुँजल देखालाय। यादोराइका कहलोइ नुनु एकटा चड़का पाथर आनेअ। हामरा तखन एके ओक भाला-भाली करे लागलिए किना करताक देखेलाई। एक नजेरेइ ताकि रहलिओ बाँसेक ठलिटाके बाँवा हाथे धोरलेइ ओकर ऊपरे लाहा भाँगाटा लेइके ठांके लागलेई। आगुनेक फूनगी लिसन छिटके लागलेई । टुवेक बादेअ देखलिये सुताटाई धुवाँ छेखे पावलिये तखन हामरा सोभेअ चकाई गेलिए। एके-ओके मेका-मेकि करेय लाउगलिए।

अँय दसर कढ़चलेय सारइ पातेक चुटी बाहर करिकेअ ओहे आइगआई धराआलाक आर फुसुक-फुसुक टानेअलागलाक। आज हामरा किताबे पढ़िये, जानिये पाथरेक भीतरे आइग आहेक। जेटा घोंसले दिखे पाववे। परान खुढ़ाय कहलाक हामरा ऐहे खातिर गाछ पाथर के देवता मानिके पुजा करियेक।

With Best Compliments From:-

NAND LAL MAHATO

LIC **Agent :** Life Insurance Corporation of India LIC

Present Office :
TUNDI ROAD, LOHAR BARWADDA, DHANBAD (JHARKHAND)
Mobile :9431162836, 9546452628

मोरग लड़ाई

मोरग लड़ाई भी खेलाई चंडी की अपनी विशेषता है। इतिहास में रोम समाज में सांड़ की लड़ाई की जाती है। इसकी कलकलाइट गूंज उठती है। दोनों तरफ से दो मुरगा को धारदार अस्त्र बांध कर निर्दिष्ट घेरे में लड़ने के लिए छोड़ दिया जाता है। कौन मुर्गा जितेगा इस विषय में बाहर में भी तर्क वितर्क होता है। बाजी भी धरी जाती है। खेलाई चंड़ी मेला के लिए एक विशेष स्थान चुन लिया जाता है। जिसको आखड़ा कहा जाता है। किसी-किसी जगह में जीवंत मुर्गे को उड़ा दिया जाता है और इसको पकड़ने के लिये प्रतियोगिता शुरू होती है। जिसकों इसका अंश मिलता है वह अपने को धन्य मानता है। एक मेला में जीवन भेड़ा को इसी प्रकार अखाड़ा उड़ान किये जाते हैं। अधिक से अधिक युवा वर्ग इसमें शामिल होते हैं।

बझा बिधा

यह अलग ही पहचान रखता है। जंगल में रहनेवाली जनजाति शिकार पशु तथा जंगली जानवर से वचने के लिए तीर चलाना, शिकार करना अतिआवश्यक हो जाता है। वेझा विंधा एक विशेष स्थान पर कोई वस्तु रखकर निर्दिष्ठ दूरी से निशाना लगाना पड़ता है। कभी कभी किसी मेला में केवल लोक देवी के प्रति समर्पण के रूप में मनाया जाता है और पुत्र कन्या, रोम, शोक में मुक्त या प्राप्त करने के लिये मनौती की जाती है। इसका भी विभिन्न रूप देखा जाता है। जैसे- बरवाअड्डा जी. टी. रोड़ से कुछ ही दूरी पर बड़ा जमुआँ ग्राम में मेला लगता है। एक तालाब से अपना मानत स्वरूप तालाब के मिट्टी माथा में लेकर टुकड़ा फेंका जाता है। कहीं-कहीं मिट्टी की वनावट, घोड़ा हाथी आदि मानत के रूप में चढ़ाया जाता है। इस क्षेत्र का छोटा बड़ा या कन्या के रूप में मेला का आयोग होता है। जैसा-शिलावती नही का उदगपन स्थल सिलाई मेला, कंसावती मेला, स्वर्ग रेखा आदि। निष्कर्ष-उपरोक्त विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि पहला माघ आखान दिन कुड़माली दिन पंजी का नया साल का नया दिन। वर्तमान समाजिक आर्थिक प्राकृतिक अद्योगिक परिवर्तन होने पर भी आदिम संस्कृति पर परम्परा पर प्रभाव अवश्य पड़ा है। जिसका विलुप्त होना असंभव है।

With Best Compliments From:- 9471113248

BIMAL STUDIO

STILL, VIDEO PHOTOGRAPHY

MOCHAN MARKET, Tundi Road, Barwadda, Dhanbad (Jharkhand)

विहा घारे माड़भात

पी. पी. केसरियार
शिक्षक मन्दाकिनी उच्च, विद्यालय

कने जानय विहा घरे माड़भात,
नेहीत डुभा लेके आवतलिय,
विहा घरे मेया राजा सभे जानिय,
हाथी घाड़े पालकी गाड़ी
एखन भेलो मारुति मोटर गाड़ी

काँसा पीतल, सोना उठी गेलेय,
टी.भी. पालंख वाशिंगि मेशिन हेलेक
बेटाक बावेक कोड़ी खरच नाई,
बेटीक बापेक सभे दाय......

ढ़ाक ढोलक सानाएक बाजना नाई
मईक बाजय हिन्दी फिल्मी गीत
खावन-दावन मान-अपमान बालाय नही
मद माताली चेंगड़ा गिला कमर हिलाय

छाँदना तलेंक छला कला काँखना बाँधा
धोती पिंधेक लुर नाई उठलके साला धोती
आम बिहा, महुल विहा सोना पीतल महतो हाड़ी
विड़ियो केमरा, फोटो खीचके तोड़ी धोड़ी
उठी गेलेक रीति पीढ़ीक - पीढ़ी

परान खुड़ा

पी. पी. केसरियार
शिक्षक मन्दाकिनी उच्च, विद्यालय

गोरू गोढे बड़ गाइछ तरे बागल छोवा गोरूपाल गोढालाथिक दुपोहराइ खाइक समय हेले। सभे एकठिन जअड़अ हेइके इटा उठा फदड़हथ। पअरान खुड़ा सभेकोयके डाकले इक इहिंआ आवा। आज भिनु जिनिस देखबेहइ। बाँसेक छातालेई दुईता झुड़ि-काढी बाहर करलाय। पअरान खुड़ाके चारोधाइर धेरि आदु- पादु करे लागलिओ। सोचे लागलिअे। किना करताक झुड़ि-काठि चिन्हेक ढेकाने बुझलिओ पीपड़ गाछेक हेकेक। ओञ एकटि मुड़िके सुखल पातेक ऊपरे राखलेंक। आर दसर काठिटी निचे काठिके ऊपरे धुरा देहके धुराअ लागलेक कतिखिन बादेअ देखलियेक झुड़िकाढेक गुड़ि सुखल पातेक ऊपर गिरेअ लागलेक। आर टुवेक बादेअ धुँआए लागलेक आर झलकेलागलेक तखन पअरान खुड़ाय कहलाइक देखारे-देखारे काठे आग लागलेक। कड़चलेय जुठा चुटि बाहराइके धरालइक आर टाने लागलाइक। एके देखेअ एकर खातिर आदिवासी हामरा आदिवासी गाइछ, पाथर के पुरा करियेक बुझले-एकर भीतर हामराक देवता आहेक, आर निरन मासे पीपड़ गाइछे पानी ढारिये, मानत करिये। आर पाथर गाड़िके गरामधान कुदराथान, आदि देवतानिंकर पुजा करिये।

With Best Compliments From:-

ACC

Lalu Pr. Mahato

OM ENTERPRISES

Tundi Road, Lohar Barwa, Barwadda
Dhanbad (Jharkhand)
Mobile :9204645930

टाँड़ नामता

पी. पी. केसरियार
शिक्षक मन्दाकिनी उच्च, विद्यालय

काशी टाँड़ेक काश फूल भभ-काल,
करम टाँड़े करम परब लाच लागाई भारी,
गट टाँड़े गरू गैढावल
बागाल छोबाक जुड़्वाही,
आम टाँड़े आम पाकल,
निरन दिनेक धूँध बातास झुउ
जाम टाँड़े जाम पाकल कारेकार
भेला टाँडे भेला पका लाल टोपी भाल
बड़ टाँड़े जोड़टाँड़े पारव पाखुडेक डेरा
गबर कुड़ा जेनी गिलाक नेहरक गाल फढ़ड़
छाताटाँड़े छाता मेला भरा भादरे
काड़ा लड़ई इँदटाँड़े जतेक नाढ़ा दोड़े
गाजन टाँड़े गाजन मेला भगता परब
काप-झाँप रंग तमाशा जैसन पारे साज
काँठल टाँड़े काँठल पाके आषाढ़े
पहिल विहाक बेटी छोवाक आशा बड़ी मनेक
कुड़मीडीहे कुड़मी नाई बामहनडीह नाई बामुहन
टाँड़नामता झारखण्डेक कथा शुना।

''झिलिक''

पी. पी. केसरियार
शिक्षक मन्दाकिनी उच्च, विद्यालय

आशाक झिलिक जागरहई मनें;
चलि आइलिय बिनोद बाबूक सने
बीसता बेछर चलि गेली गनिके जीवने
निहि सच रही एसन कभु सपने,

आदर्श शिक्षक हेवे साध नवयोवने,
आधा दिने बूढ़ा भेलि हताशा भाटक टने
काहाँ गेले, किना करले पूँछिय काकर ठिने
आधा संसारी-आधा मास्टरी पेछुवाटें टने।

शनि दृष्टि समये निफूटलो फूल योवने,
मंदाकिनी निरगुण भेलो पापी पाथर सिचंने।
पाण्डव बर्जित देश जल, वायु प्रदूषण
कुशिक्षाक आँधार बाढ़य निरक्षर जीवने।।

बड़शाछेक हेमाल बासात निरने
मेघ वृष्टि खरा-झरा काव्य आसाने
एक संकतेक घड़ी बावूक स्मरण धने-धने
बाटेक नाव हल-मल ढेव छने-छने

आरनि करम देरि, गड़े हाथे पिंधाउएँ बेड़ि,
नदिक निआर समय जाहेक बहि।
जदि हेइ देरि, हेति भर फेरि।
देबेंइ किना जबाब, मिछा कथा कहाँ पाप
धरम राजा आहे जागि आइज, करे समाज,
बसलाहे विचार करे, आपन दरबारे।

निदाएक वँइ एहे गाछ तर, काइदाँइ लेबँ जिउतर
देखवत लकझने, जिउ लेंब केसन माने माने।
नि पारबँ जिउलेइ, रहले डँड़इ
सिरजन करेइआ तर, उपरे आहें जे डँड़इ।
धरत राजाक हुकुम हेलाहि मके,
एखन जाइए हेतउ तके।

हे महान जमदुत, तर काम जे अद्भुत,
एखने केसे जाम सँगि छाड़ि, आहँअ जे बेसे।
आहात बहु छआ, आहि लेउआ देउआ।
करबेन मानुस करलाहँ आसा, करिसना निरासा
आहि खेति बाड़ि, आहि धार दुआर
मने आहि आरअ आसा।

करलाहँ ढेइर ढेइर आसा, करि जाब खासा
करम धरम करम बेसे, फाँके गिरलँ सेंसें।
करे निपारलँ काम, एबार बुझि नरके जाम,
जनमँअ रहँ मनुस, हेराउलँ हुँस
पाउअम न - नि - पाउअम पानि कुँस।
आगु करले काम, पाउए तेलँ ठिके दाम,
सिखलँ काँहा, ढेकलँ जँहाँ।

''मरन''

श्रीमती करूणामयी केसरिआर
एम० ए० कुड़माली

आचकाइ कहि उठलँ राहा, उँइ हामर जिनमानिक सँगि
पठउलाहे मके धरम राजा, तर जिउं लेइ हेति।
छार्डें माटिक काइआ, चार्लें आपन धार,
तइ आअलाहिस जाँहा ले, पुराउएँ मनेक साध
एहे पिरथिमे।

लेगे चार्लें तर जिनगानिक कामेक दाम,
किना देलाहिस आर किना लेहाहिस
एहे पिरथमे।
सिरजन करेइआक जमिदारिक, हिंसाब-निकास हेतेग
एबार, आहिस धारूजा न करलाहिस जड़अ।

गेलेरहँ धार तर, बहु छआँइ, कहला हाँसि......
हे तोउ नि देखा किना कहबँ सखा।
अरा गेलाहात करे काम, आपन जिउएक जालाँइ,
अखरा चिनहे पारला नि-मके, हेकँअ कने मँइ।
रहलँ अचिनहा, रहम अचिनहा, देलेननि चिनहा।

ढेइर खनले खजहँ तके, एखन पाउलाहँ ठिकेँ
सेँसेँ आउलँ हिंआ अमरित गाछेक फेडे, रहलाहँ अगरि तके
जानअ-तँइ अमरितेक बेटा, काहुँ रहले आउंवे हिंआ सेटा,
आउबे करवे हिंआँ, अमरित खाइएक तेँहें
जानँ तँइ खाबेनि बिस, मानुस हेकिस।

सुने तबे सुने हामर नेहर,
सिरजन करे पाठउरसिक जाके,
धुरिके जनम ना दिहोक अके।
पावइहोक ना पिरथिमे, दिहोक ठँइ मरहलके,
रपम गाछ मिलि रहम सुखे दुखे,
सानति दिहोक मके

आरअ जे कतेग करबँ नेहर, डहरके डहरि,
एके पिरथिमे, जेसन आजए ना हिअक धुरि।
अकतअ बहि जाहेक, दुखाइ उठलेक छाति,
बाँधजए गेला भाति जतेक सँगि साथि,
बेरा हेलि लिहि चिहि, डुबति एंधांउ सुरज।

जानल बहु छआँइ, करे लागला धाँइ फाँइ,
देखला आँधार, आचाकाइ हेलेक दिनेइ राइत,
नि खाटलेन काकरअ बरात, हेलेन राइत,
नि पारलेथिक बाँचाजए आर, काँदे लागला झार झार,
छआ पुताक काँदाइ हेलेन सार।

छाड़ि माटिग काइआ, छआ पुताक माइआ,
घार दुआर दालान बाड़ि, रहलेक गिरि पड़ि
सिरजेआक एकेरिंत, पिड़हिक पिड़हि।
धरम राजाक पेआदाँइ, डाकि लेलेक आलअ बेराइँ,
अमरितेक गाछ तरे, माइएक नरम आँचरे
आँइखा नुबलँ करे करे, हेलेक मरन
उठलाक एँधाउ धरम राजाक दरअ बारे ।।

ताहुँ कहँ हे महान दुत, मन लागाई सुना,
पाइके हुकुम, आअ रहँ एहे पिरथिमे।
ले रहँ मनुस जनम, आरअ किना धुरिक पाउअम,
करला हेंइ तिरिआ, करलाहँ सँइ बापेक किरिआ
आहे बेटा मर करे किरिआ।

तेंतिस कटि देब देबिके करलाहेन सेउरन, पहर पहर
पारलाहँ जतना टुकु, करलाहँ काम देसेक दसेक हँतिरा
करलाहँ करम पुजा, करमगित मनतरे आर अनतरे
सेउरन करलाहेंइ आखाइन दिन, आखाइन देवताके।
दुगगा आर कालि माँइ एक करलाहँ पुजा,
कालि पुजाँइ जरलाहेन दिआ, गरु बाछुरके
देलाहेन काँचि दिआ।

शिब गाजने मन उठलाहि नाचि, ढाकेक ताले ताले,
देलाहेंइ शिबेक मूँड़े अगनति बेल पात आर
निरजला पानि। खेलँअलाहँ होलि सँगिक सँगे
हरेक निआर रँगे, मुड़े मेजुर पाँखा, बाँका महन बंसिधारि
जेसन खेलेइ गोप गौपि संगे।
करलाँह लकखि सरअसति, कारतिक,
मनसा आरअ आर-आर पुजा।

आर कतेग कथा कहबँ जे तके,
मने जदि हेद ड़हरे कहँव तके।
हेकँ मँइ खुदरअ मानुस,
अके देखि जदि हेराउलँ हुँस
पासरि जदि जाँउ, ना हेइ खेआल,
पँहचि धरम दुआर, किना करम, सहाइ हेबे तँइ।

प्रयुक्ति विकास के नाम से जमि अधिग्रहण शुरू किया।

1. हाटिया	9200 एकर	25 गाँव
2. पात्ताहातु	4450 एकर	19 गाँव
3. बोकारो	32990 एकर	45 गाँव
4. जमशेदपुर	16825 एकर	
5. पलामू	सिंचाई प्रकल्प 3000 एकर	

इस क्षेत्र के अधिकार आदिम आदिवासी का अभी तक उचित मुआवजा नहीं मिला। ब्रिटिश प्रशासन कुड़मी जाति का आन्दोलन को सन्दिग्ध बनाकर रख दिया। तथा इतिहास के पन्ना से नामों निशान मिटाने का सर्वप्रकार प्रयास किया।

किन्तु इतिहास का सही रूप एक दिन सामने आ ही जाता है।

1930 महात्मा गाँधी की डान्डी अभिजान नामक आन्दोदन में 1. मोहन महतो, 2. गोकुल महतो, 3. गणेश महतो, 4. शीतल महतो पुलिस की गोली से शहीद हुए थे। 1942 मे भारत छोड़ो आन्दोलन में जातीयपत्ताका अत्तोलन करने में मानबाजार थाना प्रागंन चुनाराम महतो (कुदा) गोबिन्द महतो (नाथुरडीह) पुलिस कि गोली में शहीद हुए थे। इन लोगो के साथ हरिपद महतो, बाधु महतो, यतीन्द महतो, मकाड महतो साथी थे।

अफसोस की बात शहीद बेदी नही बना। अपर पक्ष में तमलुक का मातर्गिनी हाजरा उसी आन्दोलन मे ऐतिहासिक बन गयी। चन्द्र शेखर महतो 1930 मे लवण सत्याग्रह में 3 मास जेल हुए थे। स्वीधीनता संग्रामी रूप में 1000/- भता मिलता था। स्वाधीनता आन्दोलन का दस्तावेज मे ऐसी बहुत से संग्रामी कुड़मी महतो का बलिदान है, मैं आशा करता हूँ कि ऐसा एक दिन आएगा कि कोई सपूत का अविर्भाव होगा। जो कुड़मी जाति का सच इतिहास को सामने लाने मे समर्थ होगा।

नव वर्ष की आर्दिक शुभ कामनाएँ:- 9470157441

सहेली श्रृंगार
एवं
सहेली लेडिज ब्युटी पार्लर

टुण्डी रोड, लोहर बरवा, बरवाअड्डा, धनबाद (झारखण्ड)

स्वाधीता आन्दोलन में कुड़मी

पी. पी. केसरियार
शिक्षक मन्दाकिनी उच्च, विद्यालय

मानभुम (धनबाद, पुरूलिया) पटमदा, चाडिंल, राँची, गिरिडीह, पाँच परगना सराईकेला, पोड़ाहार, धलभूम, मिदनापुर, मयुरगंज, बाँकुड़ा तथा सुन्दरगढ़, गुमला, पलामु, लोहरदग्गा, रायगढ़, सुरजगंज, संथालपरगना के कुछ अंश कुड़मी बहुल इलाका है।

अंग्रेज इस क्षेत्र में आने के पहले दिन से ही सभी आदिम जाति के साथ कुड़मीयों ने भी स्वाधीनता का पहली लड़ाई लडीं।

अंग्रेज ने जहाँ कल्पना नहीं की थी कि उनका कोई प्रतिरोध होगा। ईस्ट इंडिया कंपनी के जो भी अधिकारी भेजा जाता था उसका मानव विज्ञान मे शिक्षित होना आवश्यक था। व्यापार चलाने के साथ गुप्त रूप से लोगों का मानसिकता, प्रवृति, शारीरिक व्यवस्था, सहनशीलता सामाजिक अवस्था, रीति-रिवाज परम्परा अध्ययण करनें के बाद आधिपत्य जमाना शुरू करता था। इसी क्रम में देखा आदिम कुड़मी जाति का अधिकता नहीं बल्कि यहाँ जमीन अधिकतर कुड़मीयों के पास है।

उसी समय से सर्वप्रथम इस क्षेत्र को विभिन्न प्रदेश में बाँटकर आदिम कुड़मी सह संताल, भूमिज, हो, कोल, मुन्डा का बँटवार शुरू किया विभिन्न आदिम जाति सम्प्रदाय को प्रलोभन देकर अवीपद, नौकरी, शिक्षा का आशा देकर इसाई धर्म प्रसार करना शुरू किया। जन जाति का नेतृत्व करने वाला अधिकतर वही लोग है। किन्तु कुड़मी जाति न धर्मान्तर प्रथा विकल देखकर ब्रिटिश प्रशासन दूसरा रास्ता अननाया तथा कथित बिहार को कुर्मी सम्पद्रदाय के लोग जो यहाँ के कुड़मी से भिन्न है। अंग्रेज के दलाल बन चुके थे। उसी दलाल के सहारे छोटा-नागपुर के कुड़मी को क्षत्रिय बनाने का जाल फेंका 1929 में कुड़मी का महा अधिवेशन मुजफरपुर में हुआ और झारखण्ड क्षेत्र के आदिम कुड़मी को क्षत्रिय कुल मे प्रन्नोति देकर जेनटा (पैता) दिया गया। वर्णवादी ब्राह्मण व्यवस्था में अपने आपके शामिल कर पूर्वजों के समाने से चली आ रही रीतिरिवाज त्याग दिया और समस्त आदिम कुड़मी जाति का सर्वनाश कर दिया बिटिश काल में

भी हिन्दी भाषा नहीं समझते हैं।

आधुनिक प्रयुक्ति क्विज शिक्षा योगयोग माध्यम का उन्नति नहीं के बराबर है। इसलिए स्वाभाविक स्तर पर व्यावधान विछिन्नता उभर कर सामने आया है।

टुण्डी प्रखंड में एक सरकारी विद्यालय एक प्रोजेक्ट है। वही धनबाद में आधुनिक कम्प्युटर शिक्षा का संयोग शिल्पांचल में एवं ग्रामीण जन जीवन का अन्तर बढ़तें जा रहा है।

धानबद का मुल निवासी-धनबाद, झरिया, कतरास एवं निरसा का जनसंयोग लोक संस्कृति के धारक-वाहक यहाँ के आदिम आदिवासी, साँताल महतो (कुड़मी), भूमिज, भाल, खेड़िआ, उराँत्र, अन्य गोष्ठी राजवार, बाडरी, हाड़ि डोम, कामार, कुम्हार, कुइरी, ताँती, जोलहा आदि, हरिजन वृत्ति गोष्ठी अनार्य वंशक का है।

आदिवासी कविला, साँनताल-संथाली, कुड़मी-कुड़मालि मुण्डा-गुण्डारी, अरॉन-खड़िया अपना भाषा बोलते है। विभिन्न समान उत्तर प्रदेश, उत्तर बिहार के मैथिली, भोजपुरी, मगही, बांगाली आकर बसने लगे और यहाँ आदिवासी विस्थापित होने लगे। इस प्रकार विभिन्न भाषा के मिलीजुली भाषा 'खोरठा' भाषा की सृष्टि हुई।

लोक संस्कृति जन संयोग शिष्ट साहित्य शास्त्रीय संगीत नृत्य शिल्पकला आदि में रूचि लाने के लिए इस प्रकार शिक्षा मानसिकता साधारण मनुष्य के समझ के बाहर है।

आधुनिक जनमाध्यम- सिनेमा, थियेटर, यात्रा, रेडियो, टी. वी. केवल मात्र मनोरंजन के माध्यम बन गए है। आदिम जनसमुदाय का संयोग माध्यम केवल लोक संस्कति है। स्थानीय लौकिक पाला पार्वन- टुसु, भादु, करम, बादना, छाता, जीतिया, सहराय, खेलाय चंडी मेला आदि में अधिक जन समावेश भाव विह्वल होते है। धनबाद का जन संयोग पर्व त्योहार, आचार, अनुष्ठान केन्द्र करके नटुना, करमा, डाँड़काठि, नाचनी, झूमर, टुसु को छोड़कर जन संयोग का कल्पना करना निरर्थक है।

आखान जातरा, खेलायचंडी मेला, भान परव देखकर मालूम पड़ता है सारा झारखंड एकत्रित हुआ एवं दूर-दूर के कुटुम्ब-संबंधी मेल-मिलाप, व्यावहारिक मिलना, आदान-प्रदान करता है। आन्दोलन में मूमिका- स्वाधीनता आन्दोलन से मानभूम विभाजन और झारखण्ड आन्दोलन का मुख्य भूमिका लोक माध्यम के रूप में अधिक कार्यकारी सिद्ध हुआ है। किसी भी राजनैतिक पार्टी का मिटिंग, सम्लेलन वोट प्रचार लोक माध्यम झूमर व्यक्ति के अभाव में कल्पना करना व्यर्थ है।

बीती बात

पी. पी. केसरियार
शिक्षक मन्दाकिनी उच्च, विद्यालय

सन् 1982 झारखण्ड आन्दोलन बंगाल, बिहार, उड़िष्या फेल गया था। सिन्द्री चास रोड बंगाल का पुरूलिया जिला सम्मेलन था स्व० बिनोद बिहारी महतो के साथ बातों - बातों में मंदाकिनी उच्च विद्यालय का चर्चा हुआ और वहीं से धनबाद चले आयें। राजनैतिक सफलता साथ में शिक्षकता कुछ करने का आशा की किरण छलक रही थी। विद्यालय पहुँचने के बाद पता चला वह विद्यालय 1972 में बिनोद बिहारी महतो ने स्थापना किये थे तथा ग्रामीण जन संयोगी विषमता के कारण बंद हो गया। अनपढ़ नुनाराम महतो पुनः विद्यालय को पुनः जीवित करने में लगा हुआ था। गोविन्दपुर प्रखंड का अन्तिम छोर सदुर राजगंज टुण्डी छोड़कर कोई विद्यालय नहीं था। दीर्घ 30 साल विद्यालय से शताधिक छात्र- छात्राओं माध्यमिक उत्तीर्ण होते है। 1991 बिनाद बिहारी महतो के देहान्त हो गया और विद्यालय टुवर समान असहारा महसुस हुआ। किन्तु प्रधानाध्यापक श्री नन्दलाल महतो 16 वर्ष का सरकारी शिक्षकता छोड़कर मन्दाकिनी उच्च विद्यालय में एक ही साथ आये थे बागडोर सम्भाल लिये। जव समुदाय का अन्तर विरोध के बावजुद शिक्षकगण सम्मिलित रूप में दीर्घ 15 वर्ष निस्वार्थ एवं अवैतिनिकसेवा द्वारा विद्यालय को आगे बढ़ाया एवं शिक्षण कार्य चलते रहा। आज इस क्षेत्र का नहीं जिलाओं में अपना स्थान बनाया है।

नव वर्ष की आर्दिक शुभ कामनाएँ:- **9471562148**

श्री मुरारी ज्वेलर्स

टुण्डी रोड, बरवाअड्डा (लोहर बरवा), धनबाद (झारखण्ड)

फेन्सी आभुषणों के निर्माता एवं नवग्रह रत्नों के विक्रेता।

नोटः K.D.M 22/22 एवं हमारें यहाँ हॉल मांर्क जेवर देने पर तैयार किया जाता है।

"जमुआँ"

पी. पी. केसरियार
शिक्षक मन्दाकिनी उच्च, विद्यालय

निहि जानिअ कतेक दिन आहेक बाकी
तिस बछर काटलेक दुखी जीवनकी
एहे देखे हाईस्कूल बिनोद बाबूक बुनियादकी
आपन हाथे रपल पेड़ शोभा देइक बागानकी
खेरना घुटु खरखसा जुड़गुडा घास
पुटुस फुले घेरल मानुषेक मुहाँस
मानुष केवल नाम लेवेक मानुष
मानव मुर्ति भीतरे कपटी हृदय कलुस
आपन भावी जतेक आनलिऐक पासे
केवल हिंसा द्वेश कामढेक बीस
मेनेक रहलिऐक फुलेक परिवेश
आपन अन्तर बीषमयेक अभास
आर मानुषेक-नाई मन --
पापेक बिषाक्त हवा निजेक बलिदान
अन्तिम शेष देखेलाई
आर बाकि कुछेक दिन।
समय निहि कालेक घुरनी झड़े
बिलिन हेतेक सुन्दर बगान --
मँई आर निहि रहब चलिजाव
हे बड़ा जमुआँक मानुष --
हामर जीवन आज स्मरणकरेक
निहि लागेक जेन अभिषाप

रामदयाल मुण्डा सरने

श्रीमती करूणामयी केसरिआर
एम० ए० कुड़माली

जोहार गुरूजी अन्तिम जोहार
1981 साले
हामर घारे गड़ राखअ रहिस तँइ
उदिनेक कथा मने करि घइनअ मानिअ मँइ
तरे कृपाय पड़हे गेलँ राँची
गुरू बिना गिआन निहि गुरूके सरन करि बाँचि
गीत झुमेइर आर मादलेक ताल
एखनअ काने सुनाइ भुला निहि जाइ,
आचमका सपनअ देखलँ गुरू देव नाइ।
स्नेह भरा मधुभारवा स्मृतिपट
छात्र-छात्री सभेक सँगे मिलन अकअपट
मने पड़े सभागारे गिआन गंभीर बकतृतता
अन्तर भरा चमतकार हिआई बाँधा गाथा
1339 सन
जनम लेले दिउड़ि गाँए,
राँची महान लेखा पड़हां शिकागो डकटअरेट
राज्य सभाक सदइस पदसअश्री सममान
सभले उपरे तँइ हामर गुरू महान
जोहार गुरूजी अन्तिम जोहार
चिरअदिन तरे बाटे चले पारि हे महान

तिरंगा पताका

बीणापाणि महतो
मन्दाकिनी उच्च, विद्यालय
वर्ग- नवम्

सन 1950–26 जानवारी देशेक संविधान
डा. राजेन्द्र परसाद भारतेक महान सन्तान
तिरंगा राष्ट्रीय पताका हामराक शान
कतेक जाना निजाना बीर शहीदेक वलिदान ।।

सभेक उपरे केसरिया त्याग-तपत्सा जान
माझे शोभई धब धब विश्व शान्तिक निशान
सबुज रगें लह लह मेहनते खेत खलिआन
भिनभाषा वेशभुसा रीति नीतिक विषुम मिलान ।।

सारा विश्वे जखन चलई आतंकवाद
अहिंसा नीतिक आधार शान्तिर प्रस्ताव
पराधीन स्वाधीन चिरोदिन आदर्श महिमाक छाप
गटे दुनियाई देखाई देवोउ भारतेक परताप ।।

दुशो बछरेक गुलामी पराधीनताक
जीवन देइके राखब भान राष्ट्रीयक पताका
ध्वनि मानिय हामरा भारत मायेक धिआ पुता
धर्म संस्कृतिक महा मिलनेक विचित्र एकता ।।

With Best Compliments From:-

9031811957
8797786756

DIGITAL STUDIO MONALISA

STILL, VIDEO PHOTOGRAPHY, DESIGNING & PRINTING

Tundi Road, Barwadda, P.O.- Kalyanpur
Dhanbad (Jharkhand)

इतिहास के पन्नों में झारखंड

बीणापाणि महतो
मन्दाकिनी उच्च, विद्यालय
वर्ग- नवम्

1771	– झारखण्ड ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन
1785	– बाबा तिलका मांझी का आन्दोलन
1797	– कुंडु में मुण्डा विद्रोह- नेता शिबुमानकी
1758—99	– मानभुम में भूमिज विद्रोह
1800	– पलामु का चेरी विद्रोह नेता भुखन सिहं
1807	– तमाड़ में मुडा विद्रोह – नेता दुखन मानकी
1819—20	– तमाड़ में मुडा विद्रोह नेता रूदुकान्त
1831—1832	–कोल विद्रोह–नेता सिंघाड़े बिन्डे मानकी
1834	– भुमिज विद्रोह–नेता गंगानारायण सिंह
1845	– ईसाई धर्म का प्रवेश
1855	– साउँताल परगना जिला कानु सिद्धु
1857	– सिपाही विद्रोह गणपत राय, शेक भिखारी
1869	– छोटा नागपुर टेनेन्सी एक्ट लागू
1872	– साउँताल परगना बन्दोवस्त कानून
1878	– भारतीय वन कानून
1895—1900	– बिरसा आन्दोलन
1912	– बिहार, उडीसा बंगाल से अलग
1914	– टाना भगत आन्दोलन- जतरा भगत
1930	– नमक सत्यग्रह- नेता- सहदेव महतो, गोकुल/गणेश महतो, शितल महतो, जयराम महतो
1936	– उड़ीसा बिहार से अलग
1938	– आदीवासी महासभा- जयपाल सिंह
1942	– भारत छोड़ो आन्दोलन- चुनाराम महतो, गोबिन्द, वृंदावन महतो
1948	– झारखण्ड आन्दोलन
1955	– राज्य पुर्नगठन आयोग के समक्ष झारखण्ड अलग राज्य- जयपाल

1956 – मानभुम से पुरूलिया अलग

1963 – झारखण्ड पार्टी का कंग्रेस बिलय

1973 – बिनोद बिहारी महतो– शिबु सोरेन के नेतृत्व में झारखण्ड मुक्ति मोर्चा का गठन

1979 – झारखण्डी नेता शक्ति नाथ महतो की हत्या

1981 – छोटानागपुर– साउँताल परगना विकास प्राधिकरण गठन

1986 – आजसू गठन– प्रभाकर तिर्की, सुरज सिंह बेसरा

1987 – निर्मल महतो कि हत्या

1989 – झारखण्ड विधयक समिति गठित

1991 – बिनोद बाबु का निधन

1994 – मनिन्द्र मंडल की हत्या

1997 – बिहार विधानसभा में झारखण्ड विधयक पारित

2000 – मई में बिहार विधानसभा द्वारा झारखण्ड राज्य गठन आयोग पारित

2000 – 2 अगस्त लोकसभा में पारित

15.11.2000 – विधिवत मंत्री परिषद गठन

With Best Compliments From:-

RAJENDRA KUMAR MONDAL

LIC **C.M'S Club Member** LIC

!!अध्यक्ष!!

"झारखण्ड सुड़ी युवा समिति" धनबाद

Present Address :
At:- Barwadda, P.o:- Kalyanpur
Via:- I.S.M, Dist:- Dhanbad, Pin No.:- 826004

Mobile : 9430772546, 9973842515

''बिदाई''

सुरेश महतो
बड़ा जमुआँ

आपका मधुमाखा स्नेह भालवासा
स्मृति रेखा पट पर --
पवित्रता निरलस जीवन धन्य
आज शिक्षालय --
शिक्षक शिक्षार्थी के साथ अभिन्न अन्तर
त्रिशांति बछर मुर्त्त प्रतिक
प्रीति रक्तिम आँख का करूणा
स्पर्श अग्रज रूप समान
आप ज्ञान तापस
इसलिय शिक्षाही आपका --
ज्ञान, ध्यान, चिन्तामणी
ज्ञान रूपे आज सिक्त मंदाकिनी
आप मुक्त, आप उदार
प्रत्येक बछर, प्रत्येक छात्र-छात्राओं के
सोच में डुबती हैं गर्व आप सभाकार
आप में मनुष्य का सभी गुण
आदर्श, चिन्ता, सतता, प्रकृत
अनुसन्धार्थी
आप पतित पावन पतितेर
उधारकारी
चोक डासटर हाथे मनेपढ़े
निर्भीक अदभुद ज्ञानेक अधिकारी

कुड़माली गीतों में प्रकृति चित्रन

पी. पी. केसरियार
शिक्षक मन्दाकिनी उच्च, विद्यालय

कुड़माली गीतों में प्रकृतिका उद्दीपन बहुल्याता रूप में देखने को मिलता है। कृषि सम्प्रदायका जाती रोद, वृष्टि, उपेक्षा कर के खेत में काम करते है। एवं विश्राम करने का लिए पेड़ के छाया में निरापद आश्रय ग्रहन करते है। वसन्त काल में कोकिल को कन्ठ स्वर ग्रीष्म शीतल छाया वर्षा का झिँ-झिँ डाहुक डाहुकी मयुर मयुरी का नृत्य अकाश से विहगाँ पुर्णिमा की चाँद इजरिया रात भादो का शिशिर सुर्य किरने झलमल मानुष का भावुक मन विचलित करे उसी समय लोक कवि आपन मने गीत रचना करते है।

काँशि तअ बड़लुअ आशा तअ लागअ ।
एबेर आवत नेइहरेक लक ।।
काँशि तअ फुटलअ आशा तअ फुरालोउ ।
आर नहि आवतोउ नेइहरेक लक ।।

झिंगा फुल फुटोलउ दादा, तर बहुके आनरे ।
गड़ा धान पाक लोउ दादा, तर बहुके खेद रे ।।

भादरे भरल नदी दुकुल साँतार
श्याम नाई कने करअताक पार

बने फुटे बुँदिला फुल बनके करे आलअ
बेटि छआक मिछाँइ जनम परेक घर के करे आलअ

छुटु मुटु पखइरटि फुटलअ शालुक फुल
सेहअ फुले लगन धराई

फुड़कि छातिक बेसाती वेसिआम दिते जाबलो
काडा बगाल खालभरा कतेक घुरे आहेलो

हाँकाते हाँकते बागाल गेलि अनेक धुर
मने करि आनबे बागाल लाल शालुकेक फुल रे ।

टाँइड़े साजे गरू, खेते साजे धान गो
मायेक कराँइ छोआ साजे, जैसन नौतन चाँद गो।

मेघ आँधारि राती, बिजली चमके
एमनअ संकटेक पये आउले कार संगे।
हे श्याम एतअ रात किसे ।।

एसेधि मन पथ भुले
पड़े आधि नदी कुले हे
केमने हबअ पार,
आसार समय हयेधे आमार
हृदय माफे हे उदय ह आमार

शाल पियाल महुल बन,
उड़ु, उड़ु करेइ मन
ताल पाते बनावलँ धार
काँरााई शिलाई सबरनाखा नाचइ कुदइ
आँका बाँका कुमारी गुआई दामोदर गो।

किरन फुटेक खने छाति बिछहली बने
तरा देखि मन जुड़ाली,
एसन रूप आर ना देखअलि ।।

वन उपवने भ्रभर। गुँजने
बकुल भालती गाय रे
महुआक बासे सदा मने आसे
केह जेनअ काछे नाइरे ।।

बरिसक रातिया बिजलिक चमकिआ
नाथ बिने कैसे धरब छातिआ

दखिके बरषाक रेख डाकई डाहुका भेक
सभे मिलि भके देखतअ विपत्तिया ।

भादरे गुँदली कदअ जनहाइर लेठअ गदगदअ
लेठक सगें सुधाई पिआज काटा थाके
दुखेक कथा बइलब काके ।

कुहु सुरे डाकलअ कोकिल,
कन डाले बाँइ धेछ बासा

भारत वर्ष का आदिम अरन्य सन्तान बनमुभि को आदिम काल से ही "मा" बोलता है। गाछ पाथर को देवता ज्ञान में पूजा करता है। आदिम भारत क उत्तर सुरी झारखण्डी जनता गाछ पाथर का पूजा करता है। जाहिर, गराम, पाँच बहनी, सात बहनी, बड़ापाहाड़, मारांबुरू, सारहुल, करम, जितिया, डेनी रूप मे मानता है।

प्रकृति पूजक झाडखण्ड वासी के मातृभुमि पितृभुमि मानकर पूजा करते है। शाल पिलाय, कैंद, भेलुआ, पलास, महुल घेरा वह झाड़खण्ड अंचल प्राकृतिक वैचित्तपूर्ण जंगल माटि जीवन जीवीका में अभेंद सम्पर्क व्याक करना सम्भव नही है।

वर्तमान भारत वर्ष में वन विभाग स्पावना दिवस पर श्लोगान "एकटि गाछ, एकटि प्राण" किन्तु अन्तर से जानने का चेष्टा नही होता है। अपर पक्ष में यहा का लोक कवि प्रकृति का गोद में बैठकर शावलील क्रमे गीत का रचना करता है।

प्रत्येक उत्सव परब मेला प्रकृति पूजा का ही अन्य रूप है। इसलिए गीत रचनों में प्रकृति वर्णन इस अंचल का समाग्रीक वर्णन मिलता है।

With Best Compliments From:-

BANSI BOOK VANDAR

Tundi Road, Barwadda

कही न कही किसी रूप में बरवाअड्डा में योगदान रहा

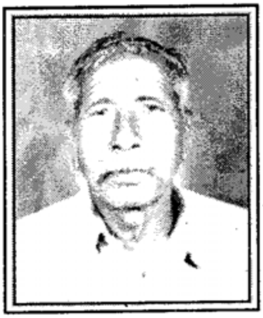

स्व0 नुनाराम महतो
मंदाकिनी विद्यालय गठन में समर्पित व्यक्ति

स्व0 रामसरन महतो
अधिवक्ता

स्व0 अंकुर मंडल
पिताः ऋषी केश मंडल
बरवाअड्डा (दामकड़ा)
(22.12.1939 – 17.06.2004)
कार्यकाल समाप्त
15.06.1998 को
सेन्ट्रल टेलीग्राफ ऑफिस
धनबाद से

स्व0 श्रीनिवास पानुरी
1920–1986
खोरठा के कवि

With Best Compliments From:-

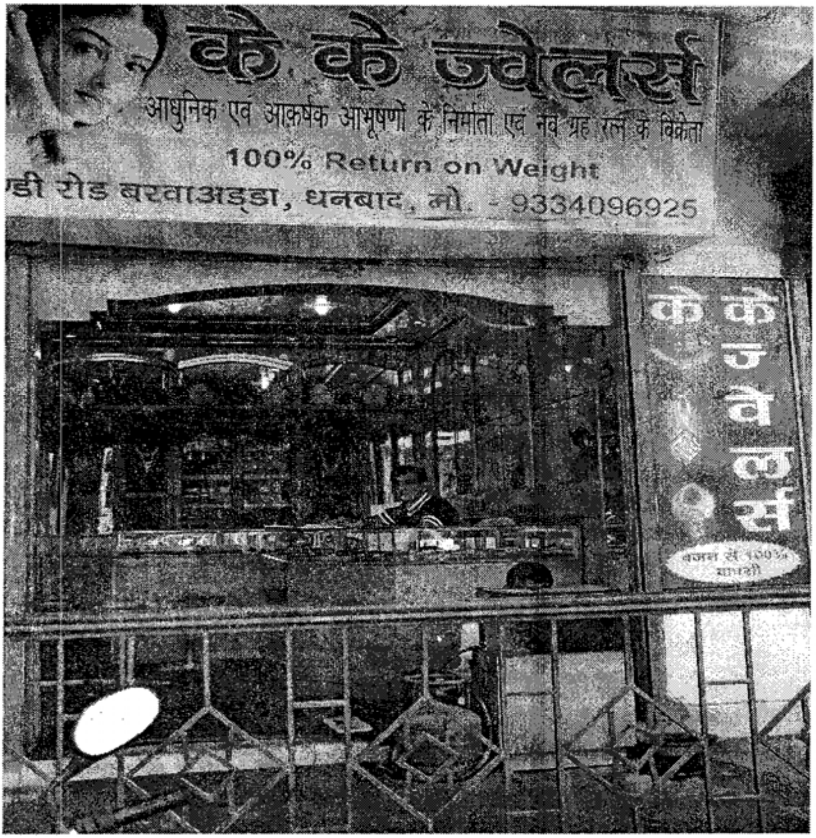

Reg. No. : DN385/2010

के के ज्वेलर्स

A House of Exclusive
Silver & Gold Jewellery

टुण्डी रोड, बरवाअड्डा धनबाद

100% Returnon Weight

1. 22/22 Cr
2. 23/cr KDM Gold

बरवाअड्डा बानार

दिलीप विश्वकर्मा

पत्रकार
बीमा अभिकर्त्ता सह समाजसेवी
सर्म्पक:- 9308798794
बरवाअड्डा

"बरवाअड्डा बानार" के प्रकाशन के
शुभ अवसर पर एवं नववर्ष की
हार्दिक शुभकामना के साथ :-

दिलीप विश्वकर्मा

With Best Compliments From:-

9507167225
9471585870

MANOJ KUMAR ROY

TATA-AIG LIFE
A New Look at Life

A new look at life

KOLKATAWEAR
INDUSTRIES LIMITED

RCM
BUSINESS

BASIL
International Ltd.
BASIL INTERNATIONAL LIMITED

Also Contact For Pan Card

Address:-
Nagar kiary, Govindpur, Dhanbad (Jharkhand)

2011

सदस्य
पंचायत समिति,
कुलबेड़ा ग्राम पंचायत
गोविन्दुपर, धनबाद(झारखण्ड)
मो०: 9905704274

श्यामा पद मंडल

स्वाधीनता के छय दशक बीत गया " बरवअड्डा" का प्रगति हुआ है। दीर्घ **32** वर्ष के बाद पंचायत चुनाव हुआ आज प्रथम यहाँ का साहित्य संकृति का कौई लेखाजोखा बारे में प्रतिका प्रकाशित नही हुआ है यह पहली अवसर है जो "बरवाअड्डा बानार" प्रकाशिक हो रहा है।

इसका हार्दिक सफल कामना रकते है।

(श्यामा पद मंडल)

नव वर्ष की आर्दिक शुभ कामनाएँ:-

सरस्वती शिशु/विद्या मंदिर कुरमीडीह

पो० - कल्याणपुर, धनबाद - 826004
सम्बद्ध वनांचल शिक्षा समिति, राँची-2
पत्रांक - 687/88/5104

With Best Compliments From:-

MANJU MEDICALS
Chemist & Drwglst
Barwadda

हमारा क्षेत्र

अर्जुन पानुरी
खोरठा कवि

मैं बरवाअड्डा का रहने वाला हुँ। मैंने अपनी आँखो से जो देखा और सुना मैं उसका सारांश लिख रहा हूँ। हमारे क्षेत्र में राजनीति, साहित्य और विकास के क्षेत्र में जो भी काम हुँआ है उसका विवरसा दर्शा रहा हूँ। हम आठवीं क्लाश में पढ़ते थे। उस समय हमारे पिजाजी के पास बुद्धिजीवी एवं राजनीति, कर्मनिष्ठ व्यक्तियों की जमघट लगी रहती थी।

झारखण्ड के महान राजनीति करने वाले श्री बिनोद बिहारी महतो जब भी गुजरते श्री निवास पानुरी से मिले आगे बढ़ते नहीं थे। और उन लोगों कि मिलनशिलता इतनी गाढ़ी थी कि वहाँ की जनता टकटकी लगायें बैटे रहते थे। बिनोद बिहारी महतो को सभी आदर्श सूचक शब्दों से सम्बोधित करते थे। खोरठा भाषा के आदि कवि स्व० श्री निवास पानुरी से झारखण्ड आन्दोदन पर विचार विमर्श होता था। कामरेड़ एके राथ से भी अच्छे सम्बन्ध थे। उन्होने झारखण्ड अलग राज्य के लिए कई बार संसद में बात रखा। **1972** की बात है कि आदिवासीयों के महान नेता शिबू सोरेन ने श्री निवास पानुरी से घंटो बात बिचार होता रहता था।

शिबू के प्रति कितना लगाव था । जो कविता के भावो में देखा जा सकता है।

वीरे खेते सोनेक अखरे
के लिखैबे नाम
धन्य ! धन्य !! धन्य !!!
हे शिबु तोयं महान

हमारे क्षेत्र में साहित्य के क्षैत्र में काम खूब हुँआ। हमारे यहाँ ढफढवाडीह गाँव के शिक्षक संताली भाषा में किवता पाठ करते थे क्षी निवास पानुरी जयंती में वे एक अच्दे शिक्षक विय थे। मन्दाकिनी हाई स्कूल के शिक्षक श्री पतित पावन महतो ने कुड़माली भाषा में अपनी जोरदार लेखनी की-कई पुस्तक प्रकाशित है। जो मेरे हाथो में दिया। साहित्य के क्षेत्र में यहाँ रंग कर्मी का उदय हुँआ है। हमारे क्षेत्र में अंग्रजी स्कूलों कि संख्या बढ़ती जार रही है। और हिन्दी के क्षेत्रों में गोण होता जा रहा है। हमारे यहाँ के बच्चें अग्रेंजी स्कूल मे अन्तर राष्ट्रीय भाषा अध्यन कर रहे है। क्यों कि राष्ट्र भाषा पर विश्वास

है। बरवाअड्डा साहित्य क्षेत्र में तीर्थ स्थल है श्री निवास पानुरी। उसका बेटा अर्जुन पानुरी भी साहित्य के क्षेत्र में अच्छी पैठ बनाली है। कई सस्थाओं ने सम्मानित किया है। बाघमारा के विधायक श्री ढुल्लु महतो ने अर्जुन पानुरी को शाल ओठाक सम्मान किया। जो इस क्षेत्र के एक इतिहास है। विकास के नाम पर केवल खाना पुरी। गोबिन्दपुर प्रखण्ड में जो भी योजना बनती है। एक भी काम सही नहीं होता। केवल कागज कलम में सब काम हो गया। पंचायत चुनाव में जो भी प्रतिनिध जीते है। अच्छी काम करने कि अभिलाषा है। हाँ यहाँ चील और गीध झपटा मारने को आतुर है। कोई भी काम सरकारी बिना घूस का नही होता।

दलाल का कहना साफ-
"दारू माड़ी ताड़ी दो"
"कमिशन दो कमिश्न दो"

हमारे क्षेत्र में एक भी योजना सही काम नही होता फणिभूषण मंडल के प्रयास से एम. पी.कोटा से एक जल मीनार मिला। हमारे क्षेत्र के विधायक फुलचाँद मंडल जी है। विधानसभा में आवाज बुलन्द करते है। माया देवी जिला परिषद की अध्यक्ष बनी है। बरवाअड्डा का राजनीति केन्द्र बिन्द है। दामकड़ा पंचायत के मुखिया- जोबारनी महतो, उप मुखिया- रीना देवी पंचायत समिति सदस्य- गणेश चौरसिया, गणेश चौरिसिया को कुछ करने की अभिलाषा है किन्तु सरकारी दाबपेंच में कुछ काम नहीं हो पाता है। फुलचाँद मंडल, गणेश चौरसिया, बैजनाथ महतो, फणिभूषण मंडल राजनीतिक में छाप है। धार्मिक क्षेत्र में- यहाँ काली पूजा, दुर्गा पुजा, चड़क पूजा, खेलाई चण्डी मेला, छट पूजा होते ही रहता है।

मुखिया पति- राजेश महतो समाज में अच्छे काम का रहे है। किसी के दुःख दर्द में शामिल होते है।नये राजनीति के अगृणी- गोपाल महतो, सुरेश महतो, गोपाल बराठ इन युवाओं ने अपने समाज के क्षेत्र को आगे बढ़ाने का प्रयास में लगे हुए है। रामकिशुन विश्वकर्मा ने भी राजनीति में कदम रखा और पंचायत चुनाव में मुखिया पद के उम्मीदवार थे। इनका समाज में काफी सम्मान है। हमारे क्षेत्र के लोग सभी अच्छे है। दिलीप विश्वकर्मा, द्विजो पद महतो, ने भी चुनाव लड़ा मुखिया पद के लिए श्री प्रयाग महतो, मृदुभाषी है। सरजु महतो बिनोद विचार मंच के संस्थापक हैं उनका तेवा अलग ढंग को है। समाज में काफी काम करते है। शशी तुरी, महेन्द्र तुरी को कौन नहीं जानता वे एक अच्छे विचारक है।

BA/L.L.B.
ADVOCATE
S.D.O. Court Compund
DHANBAD COURT
DHANBAD
Mob. No. : 9934110946

ASOK KUMAR MONDAL

बरवाअड्ड, जी. टी. रोड वर्तमान में एन.एच. वे. के किनारे अवस्थित हैं। वर्ष 1924 के सर्वे सेटलमेन्ट से यह मौजा दामकड़ा बरवा के अन्तर्गत है। मौजा दामकड़ा बरवा के अन्तर्गत जिसमें बरवाअड्डा, पाण्डेबरवा है, जी.टी. रोड का निर्माण शेरशाह द्वारा कोलकत्ता से पेशावर तक निर्माण किया था, उस वक्त जी.टी.रोड को शेरशाह सुरी मार्ग कहा जाता था बाद में लार्डडल होजी द्वारा सुरी मार्ग कहा जाता था, रोड के किनारे में विशाल बड़गाछ था, अंग्रेजों ने ड का उच्चरण र से करता है इसलिए बरवाअड्डा नाम दिया। बरवाअड्डा में 1957 के पहले पढे लिखें लोगों कि संख्या नगन्य था आज बरवाअड्डा में डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, विधायक, जिला परिषद के अध्यक्ष है। यहाँ के लोग धनीमानी व्यवसाय में अधिक प्रगति हुआ।

(अशोक कुमार मंडल)

With Best Compliments From:-

Mobile : 9939580833

VISHWAKARMA & VISHWAKARMA SAW MILL

ALL KINDS OF TIMBER MERCHANT AND GENERAL ORDER SUPPLIER

BARA JAMUA, TUNDI ROAD, BARWA-ADDA

P.O. : KALYANPUR - 826 004, DHANBAD (JHARKHAND)

गणेश चौरसिया

पंचायत समिति सदस्य
दामकड़ा बरवा पंचायत

यहाँ पर दो बड़ का पेड़ था जिसके चलते बरवाअड्डा नाम हुआ। पहलें केवल रोड़ में चार घर पानुरी - चार घर लोहार - गाँव के मंडल उत्तर में कुड़मी एवं तुरी लोग थे। कुछ घर घाटवार का था कोई शिक्षा केन्द्र नहीं था 1956 में राम खेलन पानुरी, जतन मंडल, रीसि मंडल, छाटु मंडल प्रयास से श्रीनाथ (खखु मंडल) जमिन दाता प्राथमिक स्कुल की स्थापना हुई जहाँ खपड़ेल की घर था।

बड़ा जमुआँ में श्री बिनोद बिहारी महतो एवं राम खेलन पानुरी की प्रयास में प्राईमरी स्कुल स्थापना हुई।

झारखण्ड के महापिता बिनोद बिहारी महतो के प्रयास मन्दाकिनी अच्च विद्यालय का नीव रखा है।

बरवाअड्डा में बिजली लाने में शिवदानी सिंह का अहम भुमिका थी।

मन्दाकिनी उच्च विद्यालय के बगल में शराब भट्टी था जिसका जन अन्दोलन कर डी. सी. महाबीर प्रसाद से शराब यहाँ से हटाने में गणेश प्रसाद चौरसिया इमानदारी से काम किया। वर्तमान में बरवाअड्डा काफी विकसित हुआ।

हम मन्दाकिनी उच्च विद्यालय के सभी शिक्षक गण को बधाई देते है जो निशुल्क पड़ाई किये विशेष रूप में लड़कीओं शिक्षा का दीप जालाया।

यहाँ के राजनीतीयों में भी झारखण्ड अन्दोलन में अहम भुमिका रही बरवाअड्डा, धनबाद, गोविन्दपुर, टुण्डी का राजनीतिक स्तम्भ माना जाता है।

भ्रष्टाचार में कहा जाय तो एक मुर्गा के लिए पोस्ट ऑफिस कल्याणपुर चला गया और एक बकरा के चलते हस्पताल मुर्राडीह में बन गया।

गणेश चौरसिया

Late- PRABHASH CHANDRA MANDAL
07.02.1946 - 07.12.2003

इस क्षेत्र का प्रथम अभिजन्ता प्रभाष चन्द्र मंडल विगत बिहार सरकार के अन्तरगत चालिस वर्ष तक सेवा दिया। पेशा में अभिजन्ता होने के साथ-साथ समाज के हर काम में बढ़-चढ़ कर भागीदारी लेते थे। मंडल समाज के सक्रिय सदस्य थें। बहार में नौकरी करने वावजुद 23 मार्च मंडल समाज के स्थापना दिवस पर भाग लेते थे। शिक्षा के लिए लोगो को प्रेरित करना धर्मशला मंदिर और भी समाजीक कार्य में संयोग करते थे। वर्तमान में पत्नी चन्द्राँवती देवी, दो पुत्र **1.** राजेन्द्र प्रसाद, **2.** डॉ० सुभाष चन्द्राँ सुखी परिवार है। डॉ० सुभाष चन्द्राँ ने चन्द्राँवती क्लीनक खोल कर इस क्षेत्र सेवा कर रहें है, तथा शिशु रोग विशेषज्ञ रूप में जगह बना लिये है तथा उनकी पत्नी डॉ० अनुपमा प्रसाद जो स्त्री रोग विशेषज्ञ रूप में सेवा प्रदान करती है।

चंद्रावती क्लीनिक

बरवाअड्डा, धनबाद

डॉ0 सुभाष चंद्रा
Dr. Subhash Chandra
M.B.B.S., M.D. (PED) (PAT)
EX. SENIOR RESIDENT (PED)
B.P.K.I.H.S., DHARAN (NEPAL)
CHILD SPECIALIST &
NEONATOLOGIST
शिशु रोग विशेषज्ञ

डॉ0 श्रीमती अनुपमा प्रसाद
Dr. (Mrs.) Anupama Prasad
M.B.B.S. (RAN) DGO (RAN)
OBSTETRICIAN &
GYNAECOLOGIST
प्रसुति एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ

SUNDAY OPD CLOSED

+ प्रसुति की सुविधा ☎ : **09234111428**
+ टिकाकरण प्रत्येक मंगलवार
+ 24 घंटे मरीज भर्ती करने की सुविधा
+ OPD समय : 11 बजे से 3 बजे तक

अपने बच्चों को नियमित टीकाकरण करवाकर सुरक्षित रखें ।

श्री श्री दुर्गा पूजा समिति बरवाअड्डा

स्थापित – 1974

त्रिदसि मंडल, यामिनी मंडल, अतुल मंडल
मोति मंडल, फुलचाँद मंडल इन लोगों द्वारा पूजा शुरू हुआ ।

श्री श्री सार्वजनिक दुर्गा पूजा समिति बड़ा जमुआँ

स्थापित – 2010

2010 का पंडाल

2010 का मुर्ति

!! अध्यक्ष !!
लालु प्र0 महतो

!! सचिव !!
रामकिशुन विश्वकर्मा

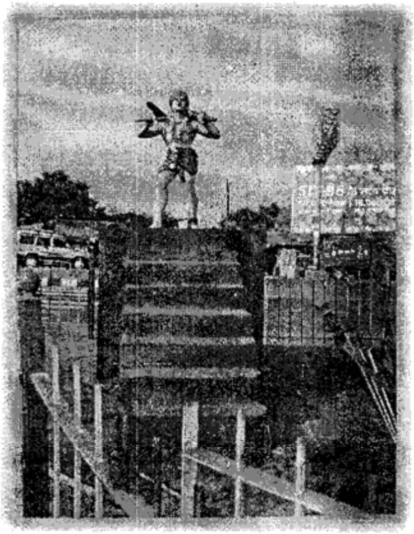

किसान चौक का स्थापना 1993 को स्व0 रंजीत सिंह के करकमलों द्वारा हुआँ। उदघाटनकर्त्ता श्री नीतीश कुमार (संसद बिहार)।

जय जवान! *जय झारखण्ड!!* *जय किसान!!*

नव वर्ष की आर्दिक शुभ कामनाएँः-

किसान विकास संघ

किसान चौक बरवाअड्डा, धनबाद, झारखण्ड– 826004

इन्द्रचीत सिंह 'गुड्डू'
अध्यक्ष

हरि पासवान
सचिव

बरवाअड्डा बाजार

झारखण्ड पब्लिक स्कूल

NUR से IX (नवम्) तक

बड़ा जमुआँ, बरवाअड्डा, धनबाद (झारखण्ड)

झारखण्ड पुलिस
परमेश्वर महतो

TRIMULA LORRY BROKER

(Truck Supplier & Commission Agent)

G. T. Road Barwadda, P.o.- Kalyanpur
Dhanbad (Jharkhand)

With Best Compliments From:-

इंडियनऑयल

BHARAT SERVICE STATION

I. O. C. PUMP

G. T. Road Barwadda, P.o.- Kalyanpur
Dhanbad (Jharkhand)

2011

मुखिया
दामकड़ा बरवा पंचायत
गोविन्दुपर, धनबाद(झारखण्ड)

जोबारानी महतो

दीर्घ बतिस आमुल के बाद पंचायत चुनाव हुआ। नारी शक्ति का विजयं हुआ।

वर्तमान बरवाअड्डा का आनुल परिवर्तन हुआ है अन्तरजातीक व्यापार का आड्डा बना है। आज पहली बार साहित्यीक पत्रिका "बरवाअड्डा बानार" प्रकाशित हो रहा है। जो इस क्षेत्र का प्रगति का परिचायक है।

जोबारानी महतो

मुखिया
कुलबेड़ा ग्राम पंचायत
गोविन्दुपर, धनबाद(झारखण्ड)

धनेश्वर मंडल

वर्तमान समय में बरवाअड्डा विभिन्न भाषा-संस्कृति का आड्डा बना है। व्यापारिक अन्तरजातिक आयात/नियात होता है आज प्रथम साहितियक प्रतिका " बरवाअड्डा बानार " प्रकाशित हो रहा है।

जिसका हार्दिक शुभकामना देते है।

धनेश्वर मंडल

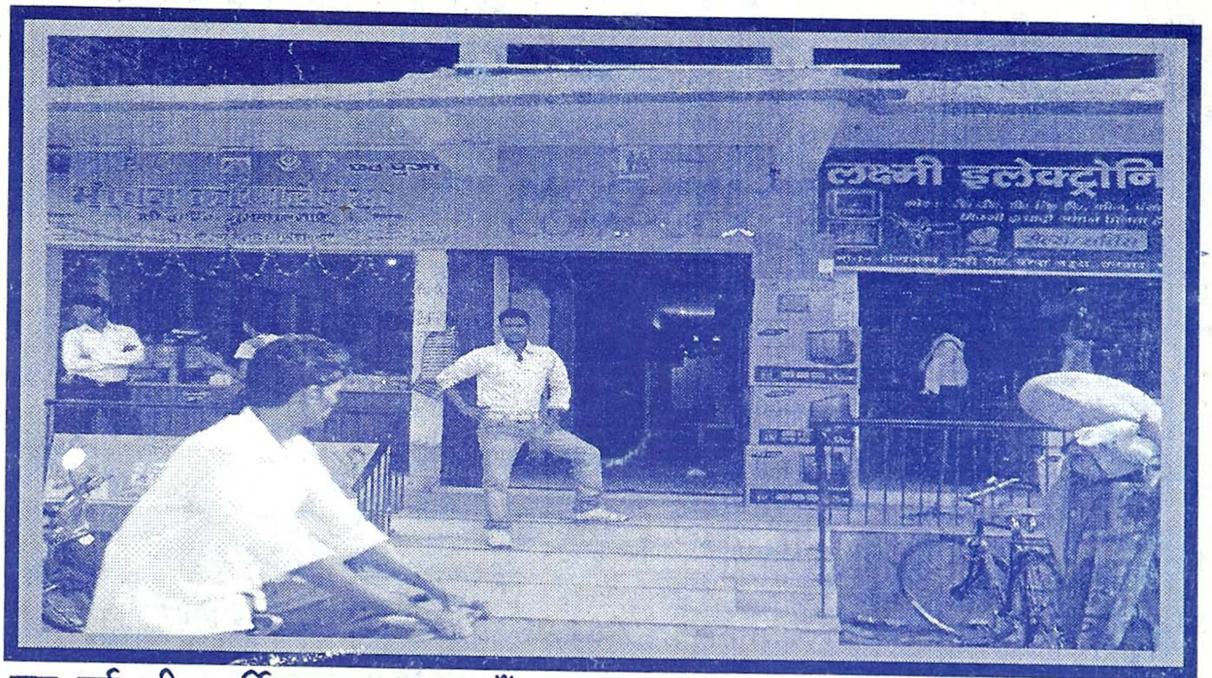

नव वर्ष की आर्दिक शुभ कामनाएँः-

मोचन कॅम्प्लेक्स
एवं
मोचन परिवार

लेखक का अन्य कृतियाँ

1. "बिहान" (कुड़माली कविता)
2. "दिवकार" (कुड़माली काव्य)
3. कुड़माली के कवि एवं काव्य (अप्रकाशित)
4. कुड़मालि चारी (अप्रकाशित)
5. कुड़माली मांगर (अप्रकाशित)
6. कुड़मी कुलेक कुलअ तिलक
7. कुड़माली शब्द कूघि

रु.20